बुन्देलखण्ड के परमार

(राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं क्रान्तिकारी इतिहास)

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अका

Scanned with CamScanner

बुन्देलखण्ड के परमार

(राजनैतिक-सांस्कृतिक एवं क्रान्तिकारी इतिहास)

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला
एम.ए., पी.एचडी (इतिहास), बी.लिब्. एस.सी.
कुंजनपुरा दतिया (म.प्र.) पिन - 475 661

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

Scanned with CamScanner

बुन्देलखण्ड के परमार : डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

Bundelkhand ke Parmar : Dr. Ramswaroop Dhengula

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

■ प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिये भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत भारत सरकार के द्वारा रियायती दर पर उपलब्ध कराये गये कागज एवं मध्यप्रदेश शासन की ओर से प्राप्त अनुदान की मदद से रियायती मूल्य पर मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग,
भोपाल (म.प्र.) 462003,
दूरभाष : (0755)2553084 दूरलेख : अकादमी

संस्करण : प्रथम 2010

मूल्य : ₹ 180.00 (एक सौ अस्सी) मात्र

कंपोजिंग : अनुषा ग्राफिक्स, भोपाल (म.प्र.)

मुद्रक : श्री श्रद्धा आफसेट प्रिन्टर्स भोपाल, फोन - 0755-2550248

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

आवरण चित्र : औरीना के कुँअर मानधाता परमार से प्राप्त पाण्डुलिपि में दिया गया नायिका का चित्र

दो-शब्द viii-ix

संदर्भ-ग्रंथ संकेत परिचय x-xi

अध्याय-एक

बुन्देलखण्ड में परमार ठाकुरों की सत्ता का उद्गम 1-10

1. बुन्देलखण्ड की सीमाएँ। 1-2
2. परमारों की उत्पत्ति और मालवा के परमार। 2-5
3. मालवा के परमारों का बुन्देलखण्ड से संपर्क। 5-6
4. मालवा के परमारों के बुन्देलखण्ड की ओर झुकाव के कारण। 6-8
5. महुअर तलहटी की राजनैतिक स्थिति। 8-9
6. संदर्भ-ग्रंथ। 9-10

अध्याय-दो

बुन्देलखण्ड का पहला परमार शासक और उसका समय 11-30

1. पुन्यपाल परमार और बुन्देलखण्ड। 11-13
2. पुन्यपाल परमार और मालवा की धार शाखा। 13-17
3. पुन्यपाल परमार का सहयोग ओर गढ़कुंढ़ार पर अधिकार। 17-20
4. परमार बुन्देलाओं के संबंधों की शुरुआत। 20-22
5. पुन्यपाल परमार और पवाया। 22-28
6. संदर्भ ग्रंथ। 28-30

अध्याय-तीन

पुन्यपाल परमार के बाद बुन्देलखण्ड में परमार सत्ता के प्रमुख ठिकाने 31-50

1. पुन्यपाल परमार के पुत्र और उनके ठिकाने 31-33
2. बेरछा के परमार 33-43
3. रतनगढ़ और देवगढ़ के परमार 43-49
4. संदर्भ-ग्रंथ 49-50

अध्याय-चार

करैरा और अंचल के परमार 51-72

1. करैरा में परमार सत्ता का उत्थान 51-58
2. करैरा अंचल के जागीरदार 58-64
3. घाटी मयापुर, केरुआ, करइया और बिल्हारी के परमार 64-71
4. संदर्भ-ग्रंथ 71-72

अध्याय-पाँच

छतरपुर का परमार राज्य 73-109

1. छतरपुर में परमार राज्य की स्थापना एवं प्रथम शासक 73-81
2. छतरपुर के अन्य परमार शासक 81-86
3. छतरपुर के अंतिम दो परमार शासक 86-95
4. छतरपुर राज्य में स्वतंत्रता आंदोलन 95-106
5. संदर्भ-ग्रंथ 107-109

अध्याय-छह

बैरी का परमार राज्य। 110-114

1. बैरी कस्बे की स्थिति और परमार राज्य की स्थापना 110
2. बैरी के शासक 110-113
3. संदर्भ-ग्रंथ 113-114

अध्याय-सात

शेष परमार जागीरदार-सामंत एवं क्रांतिकारी परमार 115-192

1. अगोरा के राधोदास परमार 115-119
2. मुगरा के परमार नौने अर्जुनसिंह 119-129
3. केरुआ के हीरासिंह परमार 129-133
4. छतरपुर की रानी झड़कुँअरि परमार 133-135
5. अमीटा-बिलाया के बरजोर सिंह परमार 135-146
6. दिनारा-करैरा अंचल के क्रांतिकारी परमार 146-159
7. दतिया के अंचल के परमार 159-169

Scanned with CamScanner

8. उगोरा के परमार 169–174
9. औरीना के परमार 174–183
10. आलमपुर के परमार 183–185
11. दतिया नगर के परमार 185–187
12. संदर्भ-ग्रंथ 187–192

अध्याय-आठ

परमारों के अंतर्गत प्रशासन, भू-राजस्व व्यवस्था, कृषक, सिंचाई एवं ग्राम्य व्यवस्था 193–258

1. परमारों का मध्यकालीन प्रशासन 193–204
2. छतरपुर के परमार राज्य का प्रशासन 205–215
3. भू-राजस्व एवं आय के अन्य स्रोत 215–241
4. सिंचाई के साधन 241–242
5. कृषक और ग्राम्य-व्यवस्था 242–254
6. संदर्भ-ग्रंथ 255–258

अध्याय-नौ

बुन्देलखण्ड के परमारों का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास 259–384

1. विविध ललित कलाएँ 259–294
2. साहित्य और साहित्यकार 295–316
3. लोकप्रवृतियों का लेखा 316–347
4. सामाजिक-इतिहास 347–369
5. आर्थिक-इतिहास 369–377
6. संदर्भ-ग्रंथ 377–384

अध्याय-दस

परिशिष्ट एवं नक्शा 385–406

1. इस ग्रंथ में प्रयुक्त नवीन सामग्री 385–394
2. बुन्देलखण्ड में परमार ठकुरांस के प्रमुख स्थानों का नक्शा 395
3. पन्द्रहवीं सदी का भारत 396
4. संदर्भ-ग्रंथ-1 सूची 397–406

Scanned with CamScanner

लेखक परिचय

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला का जन्म, दतिया म.प्र. में 25, अक्टूबर सन् 1950 को कुंजनपुरा निवासी श्री हितकिशोर ढेंगुला के घर हुआ था। आपके पूर्वज झाँसी जिले के बेतवा के किनारे स्थित ऐतिहासिक स्थान एरच से लगभग सात पीढ़ी पूर्व दतिया आए थे। आपकी एम.ए. तक की शिक्षा दतिया महाविद्यालय में हुई। बाद में लायब्रेरी साइंस की डिग्री ग्वालियर एम.एल.बी. से प्राप्त की और उसके बाद इतिहास में पी.एच.-डी. की उपाधि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से देश के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. भगवानदास गुप्त के निर्देशन में सन् 1982 में प्राप्त की।

आपको लिखने पढ़ने को शौक प्रारंभ से था, आप सन् 1962 से कविताएं लिखने लगे थे और मंचों जाकर उनका वाचन भी लगातार करते थे। उस समय आपका नाम "बाल कवि राम" था। यह नाम आपको देश के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय वासुदेव गोस्वामी द्वारा दिया हुआ था। कविता लिखने की प्रेरणा श्री गोस्वामीजी से ही आपको मिली थी, और आपका एक कहानी संग्रह "समझे लायब्रेरियन" नाम से प्रकाशित है।

इतिहास में शोध की प्रवृत्ति के जनक आपके शोध निदेशक डॉ. भगवानदास गुप्त थे। बाद में इस शोध की प्रवृति को प्रोत्साहन महाराज कुमार रघुवीर सिंह एवं उनके द्वारा स्थापित, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ और वहीं के डॉ. मनोहरसिंह राणावत द्वारा मिला। सन् 1980 से लगातार आपने इतिहास के शोध-पत्रों का वाचन विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थानों में लगातार किया है। इन शोध-पत्रों की संख्या साठ से अधिक हैं। सन् 2008 में आपको 1857 पर काम करने के लिए स्वराज संस्थान भोपाल द्वारा जिला स्तरीय फैलोशिप प्रदान की गई थी, विभिन्न संस्थानों में लायब्रेरियन के रूप कार्य करते हुए आप अक्टूबर 2010 में जिला पुस्तकालय दतिया से सेवानिवृत्त हुऐ हैं। प्रस्तुत पुस्तक "बुन्देलखण्ड के परमार" आपके दस वर्ष से भी अधिक समय से शोध का निष्कर्ष है।

Scanned with CamScanner